

Title: Need to take measure for improvement of agriculture sector in the country.

**श्री प्रेम सिंह चन्दमारा (आनंदपुर साहिब) :** चालू वर्ष में खाद्यान्न का उत्पादन गत 5 वर्षों की तुलना में सबसे अधिक 271.98 मिलियन मीट्रिक टन है। यह एक सुखद समाचार है किंतु अधिक उत्पादन से देश के किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं हो पा रहा है। कर्ज के भुगतान से विवश किसान आर्थिक संकट से घिरा हुआ है। कर्ज उपलब्ध करने की सरकारी व्यवस्था किसान के आर्थिक संकट को निपटाने में समर्थ नहीं है। 1951 में देश का किसान परिवार बैंकों के माध्यम से 7.2 प्रतिशत ऋण प्राप्त करता था जो अभी 2013 तक 56 प्रतिशत ही ऋण इस स्रोत से ले पा रहा है। नेशनल सेम्पल सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार 2002-2003 में भारतीय किसान की मासिक आय 2,115 रुपये थी जो 2012-2013 में बढ़कर 6,426 रुपये हो गयी। इस दशक में किसान की आय बढ़ी परन्तु किसान द्वारा आत्महत्या करने की विवशता भी बढ़ी दिखायी देती है। मेरा विचार है कि देश की समृद्धि गाँव की समृद्धि के साथ जुड़ी है और गाँव की समृद्धि खेती की खुशहाली पर निर्भर है।

इसलिये मेरा आग्रह है कि सरकार देश में विकास के मॉडल पर पुनः विचार करे। सरकार देश में किसान की समृद्धि के लिये खेती के विकास पर बल देते हुए योजना सुदृस्तर पर लागू करे और वर्तमान कृषि विकास योजनाओं में आवश्यक परिवर्तन कर जवाबदेह आधार पर खेती के विकास के लिए परियोजनायें तैयार करे।